

Table of Contents

1. जगदीशचंद्र माथुर का परिचय
2. रीढ़ की हड्डी एकांकी का सारांश
3. रीढ़ की हड्डी एकांकी के पात्र परिचय
4. रीढ़ की हड्डी एकांकी का विश्लेषण
5. रीढ़ की हड्डी एकांकी के प्रमुख उद्धरण एवं व्याख्या
6. शब्द-संपदा

जगदीशचंद्र माथुर का परिचय

जगदीशचंद्र माथुर का जन्म सन् 1917 में उत्तर प्रदेश के शाहजहाँपुर में हुआ था। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त की। वे इंडियन सिविल सर्विस में चयनित हुए और बिहार राज्य के शिक्षा सचिव, आकाशवाणी के महानिदेशक, सूचना और प्रसारण मंत्रालय के संयुक्त सचिव जैसे महत्वपूर्ण प्रशासनिक पदों पर कार्यरत रहे। इसके साथ ही वे आजीवन साहित्य सृजन में सक्रिय रहे।

प्रयाग में अध्ययन के दौरान ही उन्होंने लेखन शुरू किया था। उनकी रचनाएँ चाँद और रूपाभ जैसी पत्रिकाओं में प्रकाशित हुईं। हिंदी नाटक और रंगमंच के विकास में उनके एकांकी और नाटकों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उन्होंने ऐतिहासिक नाटकों के साथ-साथ सामाजिक समस्याओं पर आधारित एकांकी-नाटक भी लिखे। उनकी प्रमुख कृतियों में भोर का तारा, कोणार्क, ओ मेरे सपने, शारदीया, पहला राजा, दस तस्वीरें, जिन्होंने जीना जाना शामिल हैं। उनकी संपूर्ण रचनाएँ चार खंडों में 'जगदीशचंद्र माथुर रचनावली' के रूप में संकलित हैं। कोणार्क उनका सबसे चर्चित और मंचित नाटक है। सन् 1978 में उनका निधन हो गया।



मुख्य बिंदु

- जन्म और शिक्षा
- प्रशासनिक पद
- साहित्यिक योगदान
- प्रमुख कृतियाँ
- नाटक और एकांकी लेखन

पाठ्य प्रमाण / उदाहरण

उनकी रचनाएँ चाँद और रूपाभ पत्रिकाओं में प्रकाशित हुईं। कोणार्क नाटक का मंचन हुआ।

अभ्यास प्रश्न

- जगदीशचंद्र माथुर का जन्म कहाँ हुआ था?
- उनकी प्रमुख कृतियाँ कौन-कौन सी हैं?
- कोणार्क नाटक की विशेषता क्या है?

उत्तर कुंजी

- शाहजहाँपुर, उत्तर प्रदेश
- भोर का तारा, कोणार्क, ओ मेरे सपने, शारदीया, पहला राजा, दस तस्वीरें, जिन्होंने जीना जाना
- यह उनका सबसे चर्चित और मंचित नाटक है जो ऐतिहासिक और सामाजिक विषयों को दर्शाता है।

शब्दावली

- इंडियन सिविल सर्विस - भारतीय प्रशासनिक सेवा
- एकांकी - एकअंक का नाटक
- रचनावली - साहित्यिक कृतियों का संग्रह

रीढ़ की हड्डी एकांकी का सारांश

"रीढ़ की हड्डी" एकांकी भारतीय समाज में परंपरागत विवाह व्यवस्था और स्त्रियों की शिक्षा को लेकर रूढ़िवादी सोच पर चोट करती है। यह एकांकी 1939 में लिखी गई थी, जब स्त्रियों को शिक्षा और अन्य क्षेत्रों में समान अवसर नहीं मिलते थे। इस नाटक के माध्यम से विवाह में कम पढ़ी-लिखी लड़कियों की माँग और विवाह में हो रहे लेन-देन जैसी सामाजिक कुरीतियों को उजागर किया गया है।

मुख्य पात्र उमा एक पढ़ी-लिखी, सशक्त महिला है जो परंपरागत सोच के विरुद्ध अपने विचार रखती है।

मुख्य बिंदु

- परंपरागत विवाह व्यवस्था की आलोचना
- स्त्रियों की शिक्षा और समान अवसर
- सामाजिक कुरीतियाँ जैसे विवाह में लेन-देन
- उमा का सशक्त व्यक्तित्व

पाठ्य प्रमाण / उदाहरण

उमा का संवाद जिसमें वह कहती है कि लड़कियों के दिल होते हैं और वे बेबस भेड़-बकरियाँ नहीं हैं।

अभ्यास प्रश्न

- "रीढ़ की हड्डी" एकांकी का मुख्य विषय क्या है?
- उमा का चरित्र किस प्रकार का है?
- इस नाटक में किन सामाजिक कुरीतियों को उजागर किया गया है?

उत्तर कुंजी

- परंपरागत विवाह व्यवस्था और स्त्रियों की शिक्षा पर सवाल उठाना।
- उमा एक पढ़ी-लिखी, सशक्त और आत्मनिर्भर महिला है।
- विवाह में कम पढ़ी-लिखी लड़कियों की माँग, विवाह में लेन-देन।

शब्दावली

- रूढ़िगत - पुराने विचारों पर आधारित
- सशक्त - ताकतवर, समर्थ
- कुरीतियाँ - सामाजिक बुराईयाँ

रीढ़ की हड्डी एकांकी के पात्र परिचय

- **उमा** - पढ़ी-लिखी लड़की, सशक्त महिला
- **रामस्वरूप (बाबू)** - उमा के पिता
- **प्रेमा** - उमा की माँ
- **शंकर** - लड़का, विवाह प्रस्तावित
- **गोपालप्रसाद** - शंकर के पिता
- **रतन** - रामस्वरूप का घरेलू सहायक

मुख्य बिंदु

- प्रत्येक पात्र का सामाजिक और पारिवारिक भूमिका
- पात्रों के संवादों से सामाजिक स्थिति का चित्रण

पाठ्य प्रमाण / उदाहरण

रामस्वरूप और गोपालप्रसाद के बीच विवाह की बातचीत।

अभ्यास प्रश्न

- उमा का चरित्र कैसे प्रस्तुत किया गया है?
- रामस्वरूप और गोपालप्रसाद के बीच संवाद का क्या महत्व है?
- रतन का पात्र किस प्रकार की भूमिका निभाता है?

उत्तर कुंजी

- उमा सशक्त और पढ़ी-लिखी लड़की है जो सामाजिक रूढ़ियों को चुनौती देती है।
- विवाह संबंधी सामाजिक और आर्थिक पहलुओं को दर्शाता है।
- घरेलू सहायक के रूप में पारिवारिक जीवन में सहायक भूमिका।

शब्दावली

- घरेलू सहायक - घर में काम करने वाला व्यक्ति
- संवाद - बातचीत
- रूढ़ि - परंपरा

रीढ़ की हड्डी एकांकी का विश्लेषण

यह एकांकी भारतीय समाज में स्त्रियों की शिक्षा और विवाह व्यवस्था की परंपरागत सोच पर कटाक्ष करती है। इसमें दिखाया गया है कि कैसे समाज पढ़ी-लिखी लड़कियों को स्वीकार नहीं करता और विवाह में केवल कम पढ़ी-लिखी लड़कियों की मांग करता है।

नाटक में पात्रों के माध्यम से सामाजिक कुरीतियों, जैसे विवाह में दहेज और स्त्रियों की शिक्षा के प्रति विरोध, को उजागर किया गया है। उमा का चरित्र समाज की इस सोच के विरुद्ध खड़ा होता है और अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाता है।

मुख्य बिंदु

- समाज में स्त्रियों की शिक्षा के प्रति विरोध
- विवाह में सामाजिक कुरीतियाँ
- उमा का सशक्त व्यक्तित्व और संघर्ष
- परंपरागत सोच की आलोचना

पाठ्य प्रमाण / उदाहरण

उमा का संवाद: "क्या लड़कियों के दिल नहीं होते? क्या वे बेबस भेड़-बकरियाँ हैं?"

अभ्यास प्रश्न

- नाटक में सामाजिक कुरीतियों का क्या चित्रण है?
- उमा का संघर्ष किस प्रकार समाज के लिए संदेश देता है?
- रीढ़ की हड्डी का क्या अर्थ है?

उत्तर कुंजी

- विवाह में दहेज और कम पढ़ी-लिखी लड़कियों की मांग को उजागर किया गया है।
- उमा का संघर्ष स्त्रियों के अधिकारों और समानता की ओर प्रेरित करता है।
- रीढ़ की हड्डी का अर्थ है साहस और आत्मसम्मान।

शब्दावली

- कटाक्ष - व्यंग्य
- दहेज - विवाह में दिया जाने वाला सामान या धन
- साहस - हिम्मत

रीढ़ की हड्डी एकांकी के प्रमुख उद्धरण एवं व्याख्या

उद्धरण 1: "क्या लड़कियों के दिल नहीं होते? क्या वे बेबस भेड़-बकरियाँ हैं, जिन्हें कसाई अच्छी तरह देख-भालकर खरीदते हैं?"

यह पंक्ति स्त्रियों के प्रति समाज की रूढ़िवादी सोच की तीव्र आलोचना करती है। यह दिखाती है कि समाज लड़कियों को वस्तु की तरह देखता है, जबकि वे भी भावनात्मक और स्वतंत्र व्यक्तित्व वाली होती हैं।

उद्धरण 2: "मोर के पंख होते हैं, मोरनी के नहीं; शेर के बाल होते हैं, शेरनी के नहीं।"

यह उद्धरण पुरुष और महिला के बीच असमानता को दर्शाता है और परंपरागत सोच की व्यंग्यात्मक आलोचना करता है।

अभ्यास प्रश्न

- इन उद्धरणों का नाटक में क्या महत्व है?
- पहले उद्धरण से क्या संदेश मिलता है?
- दूसरे उद्धरण का सामाजिक संदर्भ क्या है?

उत्तर कुंजी

- ये उद्धरण नाटक के मुख्य विषय को स्पष्ट करते हैं और सामाजिक रूढ़ियों की आलोचना करते हैं।
- पहला उद्धरण स्त्रियों के अधिकारों और सम्मान की बात करता है।
- दूसरा उद्धरण पुरुष-स्त्री असमानता को व्यंग्यात्मक रूप में प्रस्तुत करता है।

शब्दावली

- व्यंग्य - कटु हास्य
- असमानता - बराबरी का अभाव
- रूढ़ि - परंपरा

शब्द-संपदा

- **अधेड़** - आधी उम्र का, ढलती उम्र का
- **तख्त** - लकड़ी की बड़ी चौकी, सिंहासन
- **गंदुमी** - गेहुँए रंग का
- **डाट** - टेक, अटकाव
- **जंजाल** - झंझट, झमेला, संसार का बखेड़ा
- **ठठोली** - हँसी, परिहास
- **करीने/करीना** - ढंग, क्रम, मेल, समानता
- **दकियानूसी** - पुराने विचार का, पुराना
- **तालीम** - शिक्षा
- **चौपट** - नष्ट, चारों ओर से खुला हुआ
- **दस्तक** - खटखटाना, हाथ का हलका आघात या धक्का, ताली
- **फितरती** - चालबाज प्रकृतिगत
- **खीस निपोरना/खीस निकालना** - इस तरह हँसना कि दाँत दिखाई दें, बेढंगी हँसी हँसना
- **खासियत/खासीयत** - विशेषता, गुण, प्रभाव, प्रकृति, स्वभाव
- **तशरीफ़** - आदर, सम्मान, महत्व
- **मार्जिन** - सीमा, किनारा
- **बालाई** - ऊपर का हिस्सा
- **तकल्लुफ़** - बनावट, शिष्टाचार
- **माफ़िक** - अनुकूल, अनुसार
- **मुखातिब** - संबोधन करने वाला, बात करने वाला
- **निहायत** - अत्यधिक, अत्यंत, बहुत ज्यादा
- **जायचा** - जन्मपत्री
- **अर्ज़** - निवेदन, प्रार्थना, चौड़ाई
- **अधीर** - धैर्य रहित, उतावला, आकुल, दृढ़ता रहित



